

देतं स्फुल्ल-

क्र. नं. १०६

पंचगव्यप्राशन



याज्ञिक

प्रयोग-स्मार्त

✓ ३१७६

आदरा का लौ संकीर्णं मम सपत्नी कस्य शरीर गले स कल कलमाष नाश नाथं ब्रह्म कूर्च वि-
चगव्य प्राशनं महं करिष्ये। तदंगस्थं डिल उपलेपन उल्लेख नाग्नि प्रतिष्ठापनाख्य कर्म करि-
संछ डिलं। उपलेपनं। उल्लेखनं। शकलमाग्नेयानि रस्य पाणिं प्रक्षाल्य वाग्य तोमवेत। जुष्टो
आग्नेयो न सुश्रुतो निस्त्रिष्टुप। एधग्नेराहुर्गणो निस्त्रिष्टुप अग्न्यावाहने विनियोग
जुष्टो दमना। एधग्नेरहं इत्यक्षतै रवात्पा। अध्वादनं दुर्धित्य व्याहृतीनां अग्निं प्रा-
प्य चत्परीरिष्टगां। संमुखो भवापरि समुष्टा पयुक्ष्यापरि स्तीर्या। अवज्वलनं। अग्न्य-
विश्वानिनो। पाणिं प्रक्षाल्य। तृष्णीं समिधा। अजो ये स्याहा। सोमाय स्याहा। इरावती
इदं विष्टु०४ विष्टोर्नुकं०५ मानं लोके व०६ तत्सर्वं तुर्व०७ ब्रह्म जज्ञान०८ ओं स्याह
अग्नेस्वष्टु ने स्वाहा१० परि समुष्टा। पयुक्ष्या। अग्नि पूजनं। पंचगव्य प्राशनं। य-
त्पीकर्म कर्म समाप्तं१२ ब्राह्मणै रनुष्ठातः दंपती पिबेत्। तस्मिन् दिवसे पंचगव्याश्चि न-
नेतिष्ठेत्। अशक्तौ। हविष्याशनं। इदं सर्वं नक्षत्रदरीने कर्तव्यं॥५२॥५३॥५४॥५५॥



मूळ प्रत पाहण्यासाठी संपर्क

इतिहासाचार्य वि.का. राजवाडे संशोधन मंडळ, धुळे
राजवाडे पथ, गल्ली नं. १, धुळे-४२४००१ (महाराष्ट्र)
दूरध्वनी क्रमांक (०२५६२) २३३८४८
Email ID : rajwademandaldhule@gmail.com